मारवाड़ी समाज
और
ब्रजमोहन बिड़ला

डॉ डी के टकनेत

उद्योग–धंधों में क्रांति मचा देने वाले मारवाड़ी समाज ने देश के सामाजिक तथा आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान देकर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। जीवन के विविध क्षेत्रों में गौरवपूर्ण उपलब्धियों के साथ–साथ जन–कल्याण की प्रबल आकांक्षा से ओतप्रोत इस समाज ने संपूर्ण राष्ट्र के विकास एवं खुशहाली को एक नई गति दी। इतिहास के सुनहरे पन्नों पर इसके बलिदान, साहस, सेवा, सूझबूझ, अध्यवसाय, मितव्ययिता, दूरदर्शिता एवं श्रम की सजीव कहानी बिखरी पड़ी है। इस पुस्तक में मारवाड़ी समाज के इसी बहु–आयामी योगदान का संक्षिप्त लेकिन रोचक ढंग से उल्लेख किया गया है।

मानवता के इतिहास में सदैव ऐसे पुरूष जन्म लेते हैं जो अपने चरित्र के बल पर न केवल समकालीन समाज को बल्कि देश की भावी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों को भी प्रभावित करते हैं। बी.एम. के नाम से लोकप्रिय ब्रजमोहन बिड़ला देश के एक ऐसे ही सपूत थे जिनकी समृद्ध भारत के निर्माण के प्रति सदैव प्रतिबद्धता बनी रही। उन्होंने देश की आजादी के लिए राष्ट्रीय नेताओं एवं क्रांतिकारियों की भरपूर मदद की। साथ ही पहली बार कई नए उद्योगों का सूत्रपात कर अनेक उत्साही उद्यमियों को करोड़पति बनाया। अपने दूरदर्शी रचनात्मक विचारों और अनूठी व्यावसायिक संस्कृति के कारण उनकी आर्थिक युगद्रष्टा के रूप में समूचे देश में ख्याति फैली। नोबल पुरस्कार विजेता प्रो. विलियम फाउलर ने बी.एम. बिड़ला की तुलना अमरीका के तृतीय राष्ट्रपति टॉमस जॅफरसन से की। इस पुस्तक में मारवाड़ी समाज तथा बिड़ला परिवार के इतिहास के साथ बी.एम. बिड़ला के योगदान को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

ISBN 81.85878.00.5
पृष्ठ संख्या : बारह + 260
रंगीन चित्र पृष्ठ : 12
श्याम–श्वेत चित्र पृष्ठ : बारह
मूल्य : रू. 1,500.00

मारवाड़ी समाज और ब्रजमोहन बिड़ला

डॉ डी के टकनेत

1993

आईआईएमई
जयपुर

प्रकाशक
आईआईएमई, जयपुर

वितरक
बंगाल स्टोर्स, कलकत्ता

मारवाड़ी समाज और ब्रजमोहन बिड़ला

© डॉ डी के टकनेत
ईमेलः iime.jaipur@gmail.com

ISBN 81-85878-00-5
प्रथम संस्करणः नवम्बर, 1993
मूल्य रू. 250.00

मुद्रक
थॉमसन प्रेस, नई दिल्ली

आवरण, सज्जा तथा रेखाचित्र
विनोद भारद्वाज / त्रिभुवन

MARWARI SAMAJ AUR BRAJMOHAN BIRLA
BY DR D K TAKNET

दो शब्द

भारतीय संस्कृति विभिन्न विविधताओं के बावजूद, अनेकता में एकता के स्चरूप को प्रकट करती है जिसमें राजस्थान के मरूधरा–पुत्रों का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसी वीर भूमि के स्च. श्री ब्रजमोहन बिड़ला, हमारे देश के प्रमुख उद्योगपतियों में से एक थे। उद्योगपति के रूप में वे दूरद्रष्टा, कर्मठ एवं विचारधारा की दृष्टि से एक प्रगतिवादी पुरूष थे। वे श्रमिकों के कल्याण की ओर बहुत ध्यान देते थे। वे इस बात को मानते थे कि एक विनियंत्रण–विहीन एवं प्रतियोगी अर्थव्यवस्था, भारतीय उद्योग के विकास के लिए अनिवार्य है। विश्व में अन्यत्र हो रही औद्योगिक प्रगति के अनुरूप, भारतीय उद्योग को बनाए रखने के लिए प्रौद्योगिक अनुसंधान तथा विकास में निवेश करने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर उन्होंने, इस देश में उद्योगों की नींव रखी।

श्री ब्रजमोहन बिड़ला का यह भी विश्वास था कि उद्योग की एक सामाजिक जिम्मेदारी एवं राष्ट्र के प्रति एक प्रतिबद्धता होती है। उद्योग का विकास, मानव–संसाधन विकास तथा सामाजिक सुधार के साथ–साथ होना चाहिए क्योंकि अर्थव्यवस्था की आधारभूत ताकत, श्रमिकों की गुणवत्ता एवं उनके सामाजिक परिवेश पर ही निर्भर करता है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि डॉ टकनेत ने प्रस्तुत पुस्तक में शोधपूर्ण अध्ययन तथा रोचक शैली द्वारा श्री ब्रजमोहन बिड़ला के व्यक्तित्व और कृतित्व को यथार्थ रूप में उजागर करने का सार्थक प्रयास किया है। विश्वास है, यह पुस्तक युवाओं में नई चेतना व देश के लिए समर्पित होने की भावना का संचार करेगी।

नई दिल्ली
30 जुलाई, 1993

पी वी नरसिंह राव
प्रधानमंत्री

प्राक्कथन

रेगिस्तान के रत्न–धन मारवाड़ी, आज देश के उद्योग–व्यापार तथा कला –कौशल के प्रेरक प्रतीक बन गये हैं। मारवाड़ियों की कौड़ी से करोड़ अर्जित करने की गाथा काफी संघर्षपूर्ण और प्रेरक रही है। 'पहले जन–कल्याण फिर दूजा काम' में विश्वास करने वाले मारवाड़ी, धनार्जन कर एक ओर लक्ष्मी–पुत्र कहलाए तो दूसरी ओर उन्होंने सामाजिक कार्यों में अतुलनीय सहयोग देकर समाज–सेवी होने की प्रतिष्ठा भी अर्जित की। उनके इस सेवाभाव के साथ ही देश के स्वतंत्रता य़ के लिए उनकी दी गई आहुतियों का इस पुस्तक में उल्लेख किया गया है। देश के सुदूर भागों में फैले मारवाड़ी समाज ने अपने कर्म तथा व्यक्तित्व के बलबूते पर आर्थिक ही नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। जीवन की कोई कर्मभूमि हो, सब पर इसने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। आज ऐसा कौनसा क्षेत्र बचा है जिसमें इस समाज का अनूठा योगदान न रहा हो? शिक्षा, कला, साहित्य, विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति, खेलकूद, युद्ध आदि विविध क्षेत्रों में किये गये उल्लेखनीय योगदान से सारा देश गौरवान्वित हुआ है। इस शोध–अध्ययन में मारवाड़ी समाज के, विगत से वर्तमान तक के इतिहास को, संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जिसका विस्तृत उल्लेख पूर्व प्रकाशित कृति 'मारवाड़ी समाज' में है।

इसी समाज की उपज है बिड़ला परिवार, जिसकी उन्नति आज भारत के आर्थिक इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय बन चुकी है। यह परिवार, अपनी गतिशील आधुनिकता के कारण साधारण व्यापारी से ऊपर उठकर भारतीय आद्योगिक जगत् का सिरमौर बन गया। इस अध्ययन में बिड़ला परिवार की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ व्यावसायिक तथा औद्योगिक प्रगति पर भी प्रकाश डाला गया है। बिड़ला परिवार के उत्तरोत्तर विकास में, विख्यात बिड़ला भाइयों में सबसे छोटे ब्रजमोहन बिड़ला की विशेष भूमिका रही जो बी.एम. के नाम से लोकप्रिय थे। अनोखे व्यक्तित्व के धनी तथा स्वप्नदर्शी बी.एम. का भारत के आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान रहा है। राष्ट्रीय जीवन का शायद ही कोई एंसा अंग हो जिस पर उनके व्यक्तित्व की छाप न पड़ी हो। आजादी की ललक, उद्योग–व्यापार और राजनीति में सामंजस्य तथा व्यवसायी संगठनों को दिशा–निर्देश देने के लिए किये गये उनके प्रयासों के कारण वह एक कर्मयोगी के रूप में विख्यात रहे। देश की समृद्धता के लिये दूरदर्शी आर्थिक विचारों तथा जन–कल्याण के नूतन एवं सफल प्रयोगों के कारण वह भारतीय उद्योगपतियों में 'प्रिन्स' के रूप में याद किये जाते हैं। बी.एम. ने अपने अनोखे व्यापार की अनूठी व्यावसायिक संस्कृति प्रतिपादित की जिसमें परंपरा और प्रगति दोनों का मिश्रण था जिससे उन्हें उल्लेखनीय औद्योगिक सफलता प्राप्त हुई। बी.एम. की ख्याति केवल व्यावसायिक सफलता तक ही सीमित नहीं थी बल्कि वह अपनी व्यापक मानवीय संवेदना के कारण भी चर्चित रहे। बी.एम. के इसी बहुमुखी व्यक्तित्व को इस पुस्तक में विशिष्ठ रूप से रेखांकित किया गया है।

यह पुस्तक एक व्यक्ति–विशेष की संघर्ष गाथा ही नहीं बल्कि मानवीय संवेदना से ओतप्रोत, मानव मात्र के कल्याण के लिए किये गये उनके बहुआयामी कार्यों की पारदर्शी झलक भी है। साथ ही, इसमें उन मारवाड़ी व्यापारियों का वृत्तान्त भी है जिन्होंने अपनी अथक मेहनत और संघर्ष के बल पर देश का कायाकल्प कर डाला। बी.एम. इसी समाज के एक ऐसे अविभाज्य अंग थे जो अपनी व्यक्तित्व तक तथा कृतित्व के कारण परिवार और समाज की सीमाएं लांघकर भारतीय व्यापारियों के पुरोधा बने। ऐसे सत्पुरूष, समाज और देश के लिए जो कुछ भी करते हैं वह इतिहास की थाती बन कर जन–जन के लिये प्रेरणादायी हो जाता है। पुस्तक की प्रस्तावना लिखने के लिए भारत के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव का विशेष रूप से कृतज्ञ हूं। साथ ही, उन सभी मारवाड़ी उद्यमियों, बिड़ला परिवार के सदस्यों तथा शुभचिंतकों का भी आभारी हूं जिन्होंने अपने पारिवारिक एवं सामाजिक इतिहास के संबंध में उल्लेखनीय जानकारियां उपलब्ध कराईं। विश्वास है यह पुस्तक, मारवाड़ी समाज और बिड़ला परिवार के इतिहास को समग्र व समन्वित दृष्टि से, उजागर करने में सहायक सिद्ध होगी।

डॉ डी के टकनेत

जयपुर

विषय सूची

दो शब्द	तीन
प्राक्कथन	पांच
श्याम–श्वेत चित्र सूची	आठ
रंगीन चित्र सूची	दस
1. मरूभूमि की उपज मारवाड़ी	1
2. रेतीले धोरों के रत्न	46
3. नई राहों का राही	89
4. अनोखे व्यापार की अनूठी संस्कृति	152
5. मिनखां में बड़ो मिनख	185
6. समृद्धि का अर्थशास्त्र	226
समय के साथ बड़ते कदम	263
संदर्भ ग्रंथ सूची	267
नामानुक्रमणिका	273

श्याम–श्वेत चित्र सूची

आर्थिक युगद्रष्टा बी.एम.।	131
ब्रजमोहन की बाल–छवि।	132
बी.एम. पारंपरिक वेशभूषा में।	133
राजा बलदेवदास बिड़ला, धर्मपत्नी योगेश्वरी देवी, पुत्रों एवं पौत्रों के साथ।	134
बी.एम. अपने भाई जुगलकिशोर, रामेश्वरदास, घनश्यामदास और बहन भगवानी देवी तथा जय देवी के साथ।	134
बी.एम. और जीवन–संगिनी रूक्मिणी देवी।	135
बी.एम. अपने अग्रज जुगलकिशोर बिड़ला, पुत्र जी.पी. और पौत्र चन्द्रकांत के साथ।	135
बी.एम., मां योगेश्वरी देवी,धर्मपत्नी रूक्मिणी देवी, पुत्र जी.पी., पुत्र–वधू निर्मला देवी, पौत्री चन्द्रलेखा और पौत्र चन्द्रकांत के साथ।	136
बी.एम., बिड़ला परिवार के आदित्य विक्रम, चन्द्रकांत, सुदर्शन कुमार और अशोक वर्धन के साथ।	136
बी.एम. और बड़े भाई जी.डी., साथ–साथ।	137
देश के प्रथम कार निर्माता बी.एम., अपनी पहली स्वनिर्मित बिड़ला मोटर–कार में, पौत्र चन्द्रकांत के साथ।	137
कानपुर में आयोजित फिक्की की बैठक में बी.एम.।	138
महात्मा गांधी, च्यांगकाई शेक और पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ रूक्मिणी देवी, जी.पी. तथा बिड़ला परिवार के अन्य सदस्य।	138
बी.एम., देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का भाव–भीना अभिनंदन करते हुए।	139
बी.एम. और पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रसन्न मुद्रा में।	139
बी.एम., द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के साथ।	140
बी.एम. तृतीय राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन और जनरल मोटर्स के अध्यक्ष जे. रोश के साथ राष्ट्रपति भवन में।	140
बी.एम. और भूतपूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई विचारपूर्ण मुद्रा में।	141
बी.एम., डॉ. बी.सी. राय के साथ।	141
बी.एम. के साथ ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय और प्रिंस फिलिप।	142
बी.एम. सऊदी अरब के शहंशाह महामहिम सऊद बेन अब्दुल अजीज़ के साथ।	142

रंगीन चित्र सूची

बी.एम. दम्पत्ति। 209

बिड़ला परिवार की कलकत्ता स्थित पुरानी एवं नई ऑफिस बिल्डिंग। 210

रांची के बिड़ला इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी का मुख्य परिसर। 211

स्मॉल इंडस्ट्रीस रिसर्च एंड डॅवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (सिरडो) की कार्यशाला। 211

कलकत्ता का मॉडर्न हाई स्कूल। 212

नेवटा गांव के विकास की एक झलक। 212

बेरोजगारी उन्मूलन के लिए नेवटा गांव में कई योजनाएं प्रारंभ की गई, जिनमें से एक है – ब्लू पॉटरी का प्रशिक्षण। 213

देश का अत्याधुनिक बी.एम. बिड़ला प्लॅनेटेरियम, जयपुर। 213

कलकत्ता हॉस्पिटल के नाम से विख्यात कलकत्ता मेडिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट। 214

कलकत्ता का बी.एम. बिड़ला साइन्स म्यूजियम। 215

उत्तर और दक्षिण भारत की स्थापत्य शैलियों का अनुपम मिश्रण : हैदराबाद स्थित संगमरमर का भव्य वेंकटेश्वर मंदिर। 216

जयपुर का विशाल और भव्य लक्ष्मीनारायण मंदिर। 216

भोपाल स्थित भव्य लक्ष्मीनारायण मंदिर। 217

कांचीकामकोटिपीठम् के परमाचार्य और शंकराचार्य के साथ जी.पी. बिड़ला, निर्मला देवी बिड़ला और परिवार के अन्य सदस्य। 217

हैदराबाद के वेंकटेश्वर मंदिर की मनमोहक दर्शनीय मूर्ति। 218

भोपाल के मंदिर की आकर्षक लक्ष्मीनारायण की मूर्ति। 219

जयपुर का कनक वृन्दावन : कला और स्थापत्य का पुनरूद्धार। 220

जयपुर के प्रसिद्ध गलता तीर्थ का जीर्णोद्धार। 220

अध्याय – 1

मरूभूमि की उपज मारवाड़ी

भारतीय संस्कृति का अग्रदूत राजपूताना, आज राजस्थान के नाम से विख्यात है। यह विश्व में त्याग, शौर्य, स्वाभिमान, स्वामि–भक्ति, कर्मठता और तेजस्विता के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहां की ऐतिहासिक गाथाएं जब चारणों और लोक–गायकों के मुंह से सुनाई देती हैं तो भुजाएं फड़कने लगती है। राजस्थान के कण–कण में व्याप्त वीरता को देखकर कर्नल जेम्स टॉड ने कहा था –'राजस्थान में छोटी से छोटी कोई ऐसी जगह नहीं होगी जहां थर्मापोली जैसा रणक्षेत्र न हो और शायद ही कोई ऐसा गांव मिले जहां लीयोनीदास जैसा शूरवीर पैदा न हुआ हो।''[1] वीर योद्धाओं की जन्म–स्थली राजस्थान की सैन्य–परंपरा अत्यन्त गौरवशाली रही है। अगणित सूरमाओं की समाधियों से आच्छादित इस वीर भूमि के सपूत अपनी मातृभूमि के लिए स्वयं को बलिदान करने को सदैव तत्पर रहे हैं। यह ीवह वीर–प्रसविनी धरती है जिसके मृत्युंजय पुत्रों ने अपने रक्त से इसका बारंबार अभिषेक कर मौत का भी विजयी त्यौहार मनाया।

इस वीर भूमि के प्रति श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए राष्ट्र–कवि रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था–'' जब–जब मैं राजस्थान की वीर प्रसविनी धरती पर कदम रखता हूं मेरा हृदय कांप जाता है कि कहीं मेरे पैर के नीचे किसी वीर की समाधि न हो, किसी वीरांगना का थान न हो।'' यहां की वीर माताएं पालने से ही अपने सपूतों को साहसी बनने और जन्मभूमि के लिए मर मिटने की सीख देती रही हैं।[2] यही कारण है कि शौर्य और पराक्रम के अनेकानेक कोहिनूर यहां के कण–कण में बिखरे पड़े हैं। युद्धभूमि में ही नहीं, उद्योग–व्यापार की कमभूमि में भी यहां के लोगों ने अपनी कीर्ति–पताका फहराई है। शौर्य ही नहीं, संगीत, साहित्य, स्थापत्य एवं अन्य कलाओं का भी, रेत के इन धोरों के बीच निर्मल झरना बहता रहा है।[3]

मरूवीर मारवाड़ी

कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों में जीते–मरते इस क्षेत्र ने कभी भी प्रकृति से हार नहीं मानी। बबूलों, केर–कांटों और तपती बालू के बीच जीवन–यापन आसान नहीं था। लेकिन यहां के निवासियों ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार कर कठोर श्रम और साहस के बल पर उसे अपने अनुकूल बना लिया। उन्होंने प्रकृति से समयानुकूल आचरण की शिक्षा ली, अकालों तथा अंधड़ों से कष्ट–सहिष्णुता का पाठ पढ़ा, साधनों के अभाव से कर्मठता की प्रेरणा ली, गर्म लुओं और तपती धूप ने उन्हें कष्ट–सहिष्णु बनाया और पानी की कमी ने उनमें मितव्ययिता की भावना का संचार किया। प्रकृति की क्रूरता को वरदान के रूप में परिणत करके ही यह धरती ऐसे बांके जवानों तथा शीर्षस्थ उद्योगपतियों की जन्मदात्री रही है जिनकी ख्याति आज सम्पूर्ण देश में फैली हैं इसी दुर्गम मरूभूमि की उपज हैं– मारवाड़ी[4], जिन्होंने अपने अदम्य साहस तथा उद्यम से देश के औद्योगिक विकास को नए आयाम और नई दिशाएं दीं। इस धरा की प्राकृतिक विपदाओं तथा

बिगड़ती आर्थिक दशा से विवश मारवाड़ी साधनहीन अवस्था में निष्क्रमण[5] कर सम्पूर्ण देश में चारों ओर फैल गए। छोटी–छोटी दुकानदारियों तथा यूरोपीय फर्मों की दलाली से शुरू किया गया उनका व्यवसाय कालांतर में भारत क औद्योगिक तथा आर्थिक विकास के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय बन गया। आज तो मारवाड़ी समाज की कर्मनिष्ठा, कला, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, विज्ञान, इंजीनियरिंग आदि अन्य कई पेशों तथा प्रवृत्तियों से गुजरती हुई बहु–आयामी बन गई है। समाज का यह रूप आज विराट् से विराट्तर होता हुआ जीवन के सभी क्षेत्रों में गतिशील हो रहा है।

मारवाड़ी समाज ही नहीं बल्कि मारवाड़ी शब्द के बारे में भी लोगों में जिज्ञासा हैं। इस शब्द के मूल के संबंध में मत–मतान्तर है। लेकिन अधिकतर विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि मारवाड़ शब्द संस्कृत के 'मरूवाट' का अपभ्रंश है। एक मत यह भी है कि जैसलमेर में एक नाम 'माड़' तथा मेवाड़ के अंतिम अंश 'वाड़' को मिलाकर 'मारवाड़' शब्द बना था जो बाद में मारवाड़ हो गया। धीरे–धीरे यह शब्द व्यापक अर्थ ग्रहण करने लगा और कालांतर में इसकी भौगोलिक सीमाएं राजस्थान ही नहीं बल्कि हरियाणा, मालवा तक फैल गई।[6] इस तरह मारवाड़ी समाज में राजस्थान से बाहर के लोगों को उनकी सांस्कृतिक समानताओं तथा विशेषताओं के कारण शामिल कर लिया गया। पहले मारवाड़ी शब्द केवल व्यवसायी वर्ग के लिए ही प्रयुक्त होता था परन्तु धीरे–धीरे इसमें व्यापार–उद्योग, नौकरी–पेशा तथा ऐसी अन्य जातियां भी समाहित होती गईं, जो राजस्थान की पारंपरिक संस्कृति की सच्ची वाहक हैं। अब मारवाड़ी शब्द, केवल जातीय नाम नहीं बल्कि देश की एक सामाजिक–सांस्कृतिक इकाई का वाचक है, जिसका मूल स्थान भले ही मारवाड़ रहा हो, लेकिन व्यवहार में जिसने सारे देश को अपना समझा तथा इसके सामाजिक–आर्थिक विकास को द्रुत गति दी।7

मेहनत का लोटा संकल्प की डोर

इस समाज का अपना अलग गौरवपूर्ण इतिहास रहा है, जो पग–पग पर संघर्ष, हिम्मत, मेहनत, जोखिम और आत्म–विश्वास के उदाहरणों से भरा है। राजपूताना के अधिकांश वैश्यों के जीविकोपार्जन का आधार व्यापार–व्यवसाय ही था। इसके बावजूद उनमें से कइयों ने व्यापार की व्यस्तताओं के साथ–साथ तत्कालीन शासन में मंत्री, सलाहकार तथा दीवान जैसे उच्च पदो के दायित्वों का भी सफलतापूर्वक निर्वाह करते हुए दिल्ली दरबार तक में सम्मान पाया।[8] मध्यकाल में यहां के कई प्रमुख व्यापारिक कस्बे अंतराष्ट्रीय और अंतरराज्यीय व्यापारिक केन्द्रों से जुड़े हुए थे जिसके कारण व्यापारिक कारवाओं और बंजारों का आना–जाना निरंतर बना रहता था। परन्तु अंगरेजी शासन के आगमन के बाद ये व्यापारिक मार्ग तथा व्यापारिक केन्द्र कायम नहीं रह सके। मराठों तथा पिंडारियों के आक्रमण और अंगरेजों की पक्षपातपूर्ण नीति के कारण राजपूताना की व्यापारिक परंपरा समाप्तप्राय हो गई। प्रकृति की प्रतिकूल परिस्थितियों तथा व्यापार के छिन्न–भिन्न ढांचे ने राजपूताना के लोगों का ध्यान ब्रिटिश–नियंत्रित क्षेत्रों की ओर मोड़ दिया।

मारवाड़ी समझने लगे थे कि पैसे के बिना व्यापार में कोई पूछ नहीं होती। वे कहते थे –''कौड़ी बिन कीमत नहीं सगा न राखे साथ, हुवै ज नामों (रूपया) हाथ में बैरी बूझे बात।'' पैसे की कीमत समझने के कारण पूर्वजों की संतुष्टि–भावना, 'परदेस की पूरी रोटी के बजाय घर की आधी रोटी भली' को त्याग कर वे कहने लगे –''रूपयो होवे रोकड़ी, सोरो आवै सांस, संपत होय तो घर भलो, नहीं भलो परदेस।'' अन्ततोगत्वा उन्होंने धनोपार्जन के लिए अपने पुरखों की धरती को छोड़ देने का निश्चय किया। अंगरेजों ने भी प्रवसन के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। इसके बाद तो नई व्यापारिक राहों को खोजते–खोजते उनके काफिले के काफिले, परदेश की अनजानी डगर पर चल पड़े। कहते हैं कि पहली बार जब मारवाड़ी व्यापारी अपना घर–बार छोड़कर प्रवास पर निकले थे तब उनके पास पूंजी के रूप में केवल लोटा–डोर थे। लेकिन वास्तविकता यह है कि लोटा–डोर तो केवल वस्तुगत पूंजी थी। पारंपरिक विरासत के रूप में उनकी अदृश्य पूंजी थी – असीम साहस, अदम्य उत्साह, दृढ़ संकल्प, सच्ची लगन, कड़ी मेहनत और इन सबसे बढ़कर थी लोक–हित की भावना, जो उन्हें सोने की तरह चमकते रेत के धोरों से मिली थी। मारवाड़ी जहां कहीं गए वहीं उन्होंने, अपने अनोखे व्यक्तित्व तथा पगड़ी की आनबान के बलबूते पर, लक्ष्मी–पुत्र के रूप में लोक–हित के अनेकानेक कार्य किये।

मारवाड़ी पगड़ी साहस की लड़ी

मारवाडी व्यापारियों का जन्म–भूमि से निष्क्रमण साहस, सहनशीलता और धैर्य की एक मिली–जुली कहानी है जो काफी रोचक तथा अनूठी है। इसी के साथ प्रारंभ होती है मारवाड़ियों का इतिहास, जिन्होंने भारतवर्ष के व्यावसायिक वर्ग में सिरमौर स्थान प्राप्त किया। इस समाज के पुरखों ने जब अपनी मायड़ भूमि को त्यागकर परदेस जाने का संकल्प लिया होगा तो वे क्षण कितने पीड़ादायक रहे होंगे? जहां बचपन की अठखेलियां रही हों, जहां की धरती में रच–बसकर बड़े होने का सौभाग्य मिला हो, जहां के लोगों से गाढ़ा स्नेह पाया हो, ऐसी अपनी जन्मभूमि को छोड़ना भला कम कष्टदायक कैसे हो सकता था? मन को कड़ा करके मारवाड़ी जब, दिसावरी का दृढ़–संकल्प और नए भविष्य की आशा को लेकर विदा होते थे तो उन्हें आभास नहीं होता था कि वे वापस भी आ सकेंगे या नही? परिवार के लोग उनको अश्रु पूरित विदाई देने कांकड़ तक जाते थे।[9] शुभ शकुन लेकर विदा होने के बावजूद उनकी यात्राएं कष्ट–पूर्ण होती थीं।

उस समय आने–जाने के सुगम साधन नहीं थे। रास्ते में खाने–पीने, ठहरने की सुविधाएं नहीं थीं। नए स्थान की भाषा और संस्कृति से परिचय नहीं था। इन सबसे बढ़कर बालू रेत के वीरान धोरों को लांघना साक्षात् मौत को चुनौती देना था। ऊंट की पीठ पर बैठ कर कोसों चलना तथा धूप की तपिश और रेतीली हवाओं के थपेड़े खाना मारवाड़ियों का स्वभाव बन गया था। सुनसान मार्गों पर चोर–डाकुओं से अक़सर मुठभेड़ें होतीं तथा कई बार जान भी गंवानी पड़ती। लेकिन फिर भी आगे बढ़ने की धुन के पक्के, इन सपूतों के पावं नहीं डगमगाते थे। अक़सर ऐसी यात्राएं ये लोग समूह में करते

थे जिसे सागा कहा जाता था। उन दिनों निकटतम रेलवे स्टेशन इंदौर और अहमदाबाद थे जहां पहुंचने में महीनों लग जाते थे। परन्तु मारवाड़ी व्यापारी, सभी पीड़ाएं भूल कर, ऐसी कठिन यात्राएं, उमंग और आनन्द के साथ करते थे। कदम–कदम पर खड़ी मौत भी उनके लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा मात्र बन गई थी। परदेस में उनका कोई जमा–जमाया व्यापार या काम नहीं था। लेकिन उन्हें अपनी कर्मठता एवं अपने बुद्धिबल पर पूरा भरोसा था जो उन्हें अपने देश से हजारों मील दूर जाने के लिए प्रेरित करता था।

उन दिनों असम और बंगाल पहुंचना सबसे अधिक कठिन और जोखिम भरा कार्य था। पैदल अथवा ऊँटों पर चलना और तेज बहती नदियों को पार करना इतना कष्टदायक होता था कि महीनों थकान नहीं उतरती थी और जल्दी स्वदेश लौटने की हिम्मत नहीं होती थी। घोर अंधेरी रातें, जंगलों में पड़े–पड़े काटनी पड़ती थीं। मच्छरों, पिस्सुओं से होने वाली बीमारियों से मृत्यु हो जाना साधारण बात थी, जिसकी परिवार वालों को वर्षों तक खबर नहीं मिलती थी। अनजान लोगों के बीच, बिना उनकी बोली समझे जीवन–निर्वाह करना बहुत सूझ–बूझ का काम था। असम में उनके अदभुत प्रवास को देखकर वहां के राज्यपाल श्रीप्रकाश ने कहा था कि साहस व शौर्य के साथ मारवाड़ी भाई, दुर्गम मार्गों तथा अगम्य पहाड़ियों को पार कर, उन क्षेत्रों में जा पहुंचे तथा निर्भयता से बस गए, जहां उन दिनों शासकीय अधिकारी भी सशस्त्र पुलिस तथा फौज के पहरे में जाने का साहस निर्भयतापूर्वक नहीं कर सकते थे। वहां मारवाड़ी भाइयों को स्वच्छंद तथा निर्भयता पूर्वक विचरते देा दांतों तले अंगुली दबा लेनी पड़ती थी। और तो और, मारवाड़ी भाई, नागाओं तक में घुलमिल गए जिनको अत्यन्त क्रूर और हिंसक कहा जाता है।[10] असम में वे घने जंगलों में पड़े रहते। रहने के लिए उनके पास होता था सिर्फ टूटा–फूटा मकान, जिसको पर्दे लगाकर कई कमरों में विभक्त कर दिया जाता था। सिर ढकने या केवल घर कहने के अलावा सर्दी और वर्षा किसी से भी राहत नहीं दे पाते थे ऐसे मकान। कभी वहां का पानी अनुकूल नहीं होता तो कभी खाना रास नहीं आता, जिससे कई बीमारियां पैदा हो जाती थीं। लेकिन फिर भी उनके हौंसले, अदम्य साहस, कड़ी मेहनत और लगन की पूंजी में कोई कमी न आती जिसके कारण, हर मुश्किल, उनके लिए आसान बन जाती थी।

बम्बई की ओर जाने वाले लोगों को राजपूताना से अहमदाबाद पहुंचने में बीस–पच्चीस दिन लग जाते थे। उसके बाद अहमदाबाद से रेल पकड़कर बम्बई पहुंचना होता था। उन दिनों की रेल यात्रा के बारे में सोचने मात्र में आज भी रौंगटे खड़े हो जाते हैं। रेल का सफर काफी जोखिम भरा तथा कष्टकारी होता था। आरक्षण या रेलों के कम समय के अंतराल से चलने की बात तो सोची भी नहीं जा सकती थी। कई दिनों पहले तैयारी करनी पड़ती थी कि फलां दिन रेल पकड़नी है। यदि किसी कारणवश रेल चूक जाती तो अगले दिन उसी वक्त तक प्लेट–फार्म पर या मुसाफिरखाने में ही पड़े रहना पड़ता। मुसाफिरखाने के नाम पर छोटा सा टिन शेड हुआ करता था जो वर्षा, सर्दी, आंधी किसी से बचाव नहीं कर पाता था। कई स्टेशनों पर तो पेड़ की छाया ही मुसाफिरखाना हुआ करती थी। रेलगाड़ियों में लोग भेड़–बकरियों की तरह ठुंसे रहते थे। गर्मी की झुलसती लाय में बिना पानी के, लू और आंधी के थपेड़ों के बीच यात्रा, कष्ट पूर्ण तथा जोखिम–भरी होती थी। दरवाजों तक यात्रियों के भरे रहने के कारण बाहर आने–जाने के लिए टूटी खिड़की का ही उपयोग होता था जो धूप–बारिश को खुला आमंत्रण देती थी। बिना पंखे, पसीने में तरबतर होकर गंदगी और दुर्गंध से भरा ऐसा सफर मारवाड़ी व्यापारी, असीम शांति और धैर्य से तय करते थे।

दिसावरी का दुःख बना सुख

वैसे तो मारवाड़ी व्यापारी पन्द्रहवीं सदी के पहले से ही राजपूताना से निष्क्रमण करते रहे, लेकिन बंगाल से उनका संबंध पन्द्रह सौ चौंसठ से हुआ जब वे राजा मानसिंह की सेना के मोदीखाने के साथ बंगाल गए। उसके बाद तो मारवाड़ियों का बंगाल लगातार आना–जाना शुरू हो गया। सोलहवीं सदी में कुछ मारवाड़ी, उड़ीसा की ओर निष्क्रमण कर वहां के व्यवसाय में प्रमुख हो गए। बंगाल और बिहार की ओर जीविकोपार्जन की तलाश में निकले मारवाड़ियों में जगत सेठ प्रमुख थे जो बंगाल के 'किंग मेकर' और 'बैंकर' के रूप में विख्यात हुए।[11] मध्य भारत में सतरह सौ अस्सी से पहले ही मारवाड़ी, बैंकिंग में जम गए। इसी दौरान, अंतरराज्यीय व्यापारिक मार्गों पर चलते हुए वे दिल्ली तक पहुंच गए थे। अठारह सौ के प्रारंभ में मारवाड़ी पगड़ी, बम्बई में भी नजर आने लगी थी तथा सदी के मध्य तक तो मारवाड़ियों में बम्बई जाने की होड़–सी लग गई थी।[12] बिड़ला परिवार की प्रसिद्ध फर्म शिवनारायण बलदेवदास भी बम्बई में अठारह सौ उनासी में स्थापित हो गई थी। बर्मा में कई मारवाड़ी, चावल और लकड़ी का व्यापार करने लगे थे जिनमें गनेड़ीवाल और बागला परिवार की फर्में अग्रणी थीं। कुछ और साहसी मारवाड़ी, प्रवास के अनगिनत कष्ट सहते हुए अठारह सौ अठारह तक असम की ओर जा पहुंचे। इसी बीच, कुछ फर्में, विदेशों में भी व्यापार करने लगीं जिनमें कलकत्ता की सोजीराम हरदयाल प्रमुख थी, जिसने चीन में अपनी फर्म की कई शाखाएं स्थापित कर ली थीं। मिर्जामल पोदार की फर्म, इंगलैंड को शॉल, हाथी–दांत और मसाले निर्यात करने लगी थी। कलकत्ता के चैनरूप सम्पतराम पहले व्यापारी थे जो सीधे मैनचेस्टर से माल आयात करने लगे थे। जुगलकिशोर बिड़ला जापान से कपड़ा आयात करने लगे थे। जुगलकिशोर बिड़ला जापान से कपड़ा आयात करने वाले पहले भारतीय थे।[13] बाद में फर्म भैंरूदान ने तो ओसाका में अपनी शाखा खोल दी थी।

कलकत्ता तो मारवाड़ी शुरू से ही आते–जाते रहे। लेकिन अठारह सौ तेरह में अंगरेज व्यापारियों को भारत में स्वतंत्र व्यापार करने का अधिकार मिलने तथा अठारह सौ साठ में दिल्ली–कलकत्ता के बीच रेल–सेवा शुरू होने के बाद तो मारवाड़ी व्यापारियों की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी होने लगी। कलकत्ता में उन्नीस सौ में प्रसिद्ध फर्म बलदेवदास जुगलकिशोर ने व्यापार प्रारंभ कर दिया था। उन्नीस सौ ग्यारह तक मारवाड़ी व्यापारियों की आबादी अकेले कलकत्ता में ही पन्द्रह हजार तक पहुंच गई थी। उन्नीस सौ इक्कीस के आते–आते मारवाड़ी व्यापारियों ने कलकत्ता के व्यापार में अपना प्रमुख स्थान बना लिया था। आजादी के पहले की जनगणना से विदित होता है कि अठारह सौ साठ से उन्नीस सौ के बीच मारवाड़ी, तेजी से देश के सभी भागों में फैलने लगे थे।

खुर्जा, हापुड़, फिरोजाबाद, हाथरस तथा मिर्जापुर के व्यापार में मारवाड़ी अग्रवाल प्रमुख हो गए। नागपुर में साहूकारी का अधिकांश काम मारवाड़ी करने लगे, जिनमें बंशीलाल अबीरचंद नामक फर्म प्रमुख थी। सेवाराम रामरिखदास का व्यापार कानपुर में फैल गया। सिंध और सतलुज नदियों के किनारे–किनारे मारवाड़ी व्यापारी आगे बढ़ते गए तथा उनका यूरोपीय व्यापारियों से नियमित व्यापार होने लगा। बिहार की तरफ मारवाड़ी, अठारह सौ दस से पहले ही पहुंच गए थे। अठारह सौ चालीस से पहले हैदराबाद में ओसवाल और माहेश्वरी बस गए जिन्होंने अधिकांश बैंकिंग व्यापार पर अधिकार कर लिया। चूरू के सोजीराम ने मिर्जापुर व फर्रूखाबाद में व्यवसाय प्रारंभ कर दिया। अठारह सौ साठ के बाद मारवाड़ी बड़ी संख्या में असम और मद्रास तक जा पहुंचे। वहां के बाजारों की गदि्दयों[14] पर उनका व्यावसायिक कौशल देखते ही बनता था। धीरे–धीरे उनकी छोटी–छोटी दुकानदारियां, बड़ी–बड़ी फर्मों का रूप लेने लगी थीं।

अठारह सौ पचास तक मारवाड़ी व्यापारी, अपनी फर्मों की शाखाएं पूरे देश में स्थापित कर चुके थे। धीरे–धीरे बढ़ती यातायात सुविधाओं तथा अंगरेजों के संरक्षण से उनका दिसावरी का दुःख कम होने लगा तथा व्यापार में कड़ी मेहनत से होने वाली कमाई का लाभ मिलने लगा। इसी कमाई से वे जहां गये वहीं मारवाड़ी बाजार, मारवाड़ी बस्ती, मारवाड़ी नगर बसाते चले गए। उन्होंने कई नगरों को नया रूप देते हुए वहां के व्यापार को समृद्ध बनाया। असम के पूर्व मुख्यमंत्री गोपीनाथ बारदोलोई के कथनानुसार– ''ब्रह्मपुत्र के तट पर आबाद गुवाहाटी, नौगांव, जोहरहाट, धूबड़ी, गवालपाड़ा, शिवसागर, डिब्रूगढ़, लखीमपुर आदि नगरों को वर्तमान रूप देने का श्रेय उन मारवाड़ियों को है, जो पिछली सदी में असम में आकर बसे हैं। इसी प्रकार, शिलांग, डिमापुर, कोहिमा, तिनसुखिया, डिगबोई और इम्फाल को आबद तथा समृद्ध बनाने का श्रेय भी राजस्थान से आकर बसे मारवाड़ियों को है। किसी भी बड़ी बस्ती या नगर में चले जाइए, उसके मध्य या प्रमुख स्थान में मारवाड़ी भाई की दुकान या मकान जरूर मिलेगा। इससे लगता है कि बड़ी बस्ती या नगर में पहली दुकान या मकान किसी मारवाड़ी भाई ने बनाया और उसके चारों ओर बस्ती अथवा नगर बसता चला गया।''[15] इसी तरह, कलकत्ता का बड़ा बाजार,, मद्रास और अमृतसर की मारवाड़ी बस्ती, बम्बई का कालबा देवी बाजार, हैदराबाद का बेगम बाजार, उत्तरप्रदेश के हापुड़ नगर का मारवाड़ी मोहल्ला, इस बात के साक्षी हैं कि मारवाड़ियों ने देशभर में नगरों व बाजारों को आबाद किया तथा अपनी मेहनत और बुद्धिबल से वहां के व्यापार को सींचकर पल्लवित किया। व्यापार की कमाई के सुख में उन्होंने अपने लोगों के साथ–साथ स्थानीय लोगों को भी भागीदार बनाया। देखते–देखते देशभर में लोक–हित के अनेक कार्य होने लगे। सेठाई का सुख राजपूताना में खुशहाली लेकर ऐसा फैला कि उन्हें रियासतों ने ही नहीं दिल्ली दरबार तक ने उपाधियां और सम्मान देना प्रारंभ कर दिया।''

व्यापार में सर्वेसर्वा

देश–व्यापी प्रवास के पश्चात् मारवाड़ी व्यापारी अपनी मीठी बोली, सच्चे व्यवहार और कम मुनाफे के कारण, शीघ्र ही अन्य व्यवसायिक जातियों की तुलना में तेजी से आगे बढ़ने लगे। विशेष तौर से बैंकिंग, हुंडी और सराफा का पूरा व्यवसाय, इनके हाथों में आ गया। बंगाल के जगत सेठों ने सतरह सौ से सतरह सौ चौंसठ तक बैंकिंग व्यवसाय में उल्लेखनीय प्रगति की जिसके कारण कई इतिहासकारों ने उनके कारोबार को विश्व बैंक से भी अधिक बड़ा बताया। इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया में उल्लेख है कि चूरू के मोहनराम सरावगी का बैंकिग व्यापार, सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैला हुआ था। मध्य भारत की अधिकतर बैंकिंग फर्में मारवाड़ियों की ही थीं। बैंकिंग के अतिरिक्त इन व्यापारियों ने जूट, हैसियन, सोना–चांदी, अनाज, आढ़त, कमीशन एजेन्सी, कपड़ा, बीमा, आयात–निर्यात आदि कई व्यवसायों में उल्लेखनीय प्रगति की। कई फर्मों का कारोबार विशाल स्तर का होने लगा था। कोटा के बहादुरमल बाफना की फर्म ने तो राजपूताना और ब्रिटिश भारत में लगभग चार सौ व्यापारिक शाखाएं खोली थीं। जबलपुर के राजा गोकुलदास पित्ती आठ सौ गांवों की जमींदारी के मालिक बन गए थे तो भगवती प्रसाद के पास संयुक्त प्रांत में एक सौ पन्द्रह गांवों की जमींदारी थी।[17] सहारनपुर जिले में जम्बूदास अग्रवाल ने, इक्कीस हजार एकड़ जमीन खरीदकर सब को आश्चर्य–चकित कर दिया था। हरविलास अग्रवाल पहले भारतीय थे जिन्होंने अंगरेज व्यापारियों को चुनौती देते हुए तमूलबाड़ी में दो सौ अस्सी एकड़ का चाय बागान खरीदा।

कई मारवाड़ी व्यापारी अपने व्यवसाय में उच्च कीर्तिमान स्थापित करते हुए चोटी पर जा पहुंचे थे। रामनारायण रूईया और गोविन्दराम सेक्सरिया 'कॉटन किंग' के नाम से प्रसिद्ध हो गए थे। बलदेवदास दूदवेवाला 'शेयर किंग', मोतीराम झुंझनूवाला 'सिल्वर किंग', रामगोपाल मोहता 'आयरन किंग', हनुमानबक्श कनोई 'टी किंग' के रूप में विख्यात हो चुके थे। चांदी के व्यापार में भरपूर पैसा कमाने वालों में सेठ बलदेवदास बिड़ला और स्वरूपचंद पृथ्वीराज रूंगटा प्रमुख थे। अफीम, पटसन तथा सोना–चांदी के सट्टे में भी मारवाड़ियों ने करोड़ों रूपये कमाये। इनमें से कइयों ने जापान, इंगलैंड, जर्मनी, इटली आदि कई देशों को चाय, कपास, अफीम, पटसन आदि का निर्यात कर काफी धन अर्जित किया। मारवाड़ी व्यापारियों की इस अद्भुत चहुंमुखी सफलता को देखकर कैप्टेन ब्रुक चार्ल्स ने अपने यात्रा–वृत्तान्त में लिखा था कि ये वैश्य, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन के व्यापारियों की प्रसिद्ध ऐतिहासिक भूमिका से भी अधिक चमत्कारी इतिहास की रचना कर रहे हैं। उनकी तीव्र प्रगति और अद्भुत कौशल को देखकर एक पाश्चात्य विद्वान् ने तो यहां तक कहा था कि एक–एक मारवाड़ी, दस–दस यहूदी व्यापारियों के बराबर बौद्धिक प्रतिभा तथा व्यापार–संचालन की क्षमता रखता है।

बैंकिंग बना आधार

बैंकिंग के कारोबार में मारवाड़ी व्यापारियों ने अद्भुत सफलता हासिल की। उनके व्यावसायिक कौशल का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनका बैंकिंग व्यापार कई शाखाओं द्वारा पूरे देश में संचालित किया जाता था। इसके बावबूद, उनकी फर्मों का प्रबंध काफी चुस्त था। सौ से अधिक व्यापारिक शाखाओं वाली फर्म बंशीलाल अबीरचंद का बैंकिंग कारोबार लंदन से रंगून तक फैला हुआ था। लाहौर तथा मध्य प्रांत का सरकारी खजाना भी इन्हीं के पास रहता था। बैंकिंग और हुंडी के व्यापार

में प्रतिष्ठित ताराचंद घनश्यामदास फर्म अठारह सौ साठ के बाद काफी विस्तृत हो गई थी। कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा था कि भारत में दस में से नौ बैंकर तथा व्यापारी, मारवाड़ के निवासी हैं। कई बड़ी–बड़ी रियासतों के खजानों का प्रबंध भी मारवाड़ी करने लगे थे। हैदराबाद के प्रमुख खजाने का नियंत्रण, गनेड़ीवाल तथा पित्ती के हाथों में आ गया था। इसके अलावा, हैदराबाद के अधिकतर बैंकर मारवाड़ी हो गए थे जिनमें सेठ श्रीचंद की फर्म रघुनाथदास की तो, देशभर में कई शाखाएं थीं। स्वरूपचंद हुक्मचंद इंदौर के प्रमुख बैंकरों के रूप में कार्यरत थे। सी.एच. कोसवेट ने लिखा था कि जबलपुर के सेठ गोकुलदास, मध्य प्रांत के सबसे धनवान् बैंकर थे। बीकानेर के ढढ्ढा परिवार की प्रसिद्ध फर्म अमरसी सुजानमल का कारोबार लाहौर और अमृतसर तक फैला हुआ था।

सैंसस ऑफ इंडिया में लेख है कि मारवाड़ियों ने सारे देश में व्यापार तथा बैंकिंग में प्रमुख भूमिका निभाई, जिसके कारण उनकी सम्पत्ति में तेजी से बढ़ोतरी होने लगी।[18] अठारह सौ उनासी में जयपुर के प्रमुख बैंकरों की सम्पत्ति, सात मिलियन स्टर्लिंग पौंड थी और बीकानेर के बैंकरों की सम्पत्ति, उन्नीस सौ तीस में साढ़े पांच करोड़ रूपये हो चुकी थी।[19] कलकत्ता में, बड़ा बाजार का मनी मार्केट इन्हीं व्यापारियों से नियंत्रित होता था, जिनका बैंकिंग कारोबार असम, बंगाल और बिहार तक फैला हुआ था। कलकत्ता की प्रमुख बैंकिंग फर्मों में ताराचंद घनश्यामदास, बंशीलाल अबीरचंद, सदासुख गंभीरचंद, सेवाराम कालूराम, चैनरूप सम्पतराम, सेवाराम खुशालचंद और रामलाल बिहारीलाल शाह प्रमुख थीं। इनका, वहां के बैंकिंग व्यवसाय पर जबरदस्त प्रभाव था। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वहां की व्यापारिक निर्देशिका में, स्वदेशी बैंकरों की जो सूची दी गई उसमें आधे नाम मारवाड़ी बैंकरों के थे। जब भारत में यूरोपीय व्यापारियों की गतिविधियां बढ़ने लगीं तो वे उन्हें भी वित्तीय सुविधाएं उपलब्ध करवाने लगे। हैदराबाद के कई मारवाड़ी बैंकर, अंगरेजों के बैंकर हो गए थे। रीयांवाले सेठ तथा बंशीलाल अबीरचंद, पंजाब में अंगरेजों के खजांची थे। बाद में मारवाड़ियों ने रियासतों के राजा–महाराजाओं तथा अंगरेजों को भी ऋण–सुविधाएं प्रदान करनी शुरू कर दी थीं।[20]

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ इंडिया में लिखा है–''राजपूताना के मारवाड़ी, आंतरिक व्यापार और वित्त पर अधिपत्य रखते हैं तथा भारत के सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर पाये जाते हैं। वे बड़े पूंजीपति होने के साथ–साथ, छोटे ग्राम साहूकार भी हैं। किसी भी जाने–माने मारवाड़ी की जारी की गई हुंडी की, भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी साख है। भारत में आधुनिक बैंकिंग की शुरूआत का श्रेय भी मारवाड़ियों को ही दिया जाता है।'' मैं, रघुनाथमल प्रथम बैंकर थे जिन्होंने अपने बैंकिंग कारोबार का संचालन अंगरेजी पद्धति से किया। पहले भारतीय बैंक की स्थापना, ओंकारमल सराफ तथा बलदेवदास दूदवेवाला ने की थी। उसके बाद तो मारवाड़ी व्यापारियों में बैंक स्थापना की होड़–सी लग गई। पदमपत सिंहानिया तथा मंगतूराम जयपुरिया ने हिन्दुस्तान कॉमर्शियल बैंक लि. व यूनिवर्सल बैंक ऑफ इंडिया की कई शाखाएं खोलीं। बाद में पंजाब नेशनल बैंक भी डालमिया के नियंत्रण में आ गया। चतुर्भुज लोहिया ने भी दो करोड़ रूपये की पूंजी से एक बैंक की स्थापना की। गोपालदास मोहता ने लक्ष्मी बैंक की आधारशिला रखी। राजस्थान बैंक लि., बैंक ऑफ जयपुर, बैंक ऑफ बीकानेर, हिन्द बैंक आदि को प्रारंभ करने में भी मारवाड़ी ही आगे आए। बाद में यही बैंकिंग कारोबार, इनके लिए वरदान साबित हुआ। इसके संबंध में अर्थशास्त्र के विद्वान् गाडगिल ने कहा था कि बैंकिंग में मारवाड़ियों की क्षमता और श्रेष्ठता उनकी व्यापारिक सफलता का बहुत बड़ा कारण है।

दलाली से खुशहाली

अंगरेजों के भारत आगमन से पूर्व मारवाड़ी, बैंकिंग और अन्य व्यवसायों में अग्रणी थे। लेकिन ब्रिटिश राज आने के बाद, पुराने भारतीय बाजार,, हाट और व्यापारिक मार्ग नष्ट होने लगे। अंगरेज व्यापारियों को कच्चा माल खरीदने तथा इंगलैंड में निर्मित माल बेचने के लिए मध्यस्थों की जरूरत पड़ी, जिसके लिए सबसे पहले, बंगाली और खत्री व्यापारी आगे आए। लेकिन जैसे–जैसे मारवाड़ी व्यापारियों का अंगरेजों से सम्पर्क होने लगा, वैसे–वैसे उनकी व्यावसायिक कुशलता तथा चतुराई को देखकर उन्हें दलाली का काम अधिक से अधिक मिलने लगा। अठारह सौ से उन्नीस सौ के बीच चूरोपीय कम्पनियों की अधिकांश बेनियनशिप, मारवाड़ी प्राप्त करने में सफल हुए। सूरजमल झुंझनूवाला ग्राहम एंड कम्पनी के बेनियन बने। हरिराम गोयनका, रिद्धकरण सुराणा और गुरूसहायमल घनश्यामदास ने रैली ब्रदर्स का काम संभाल लिया। नाथूराम सराफ होर मिलर की बेनियनशिप का काम देखने लगे। इसी दौरान लक्ष्मीनारायण कनोड़िया मॅक्लियोड़ कम्पनी के एजेंट बन गए। ओंकारमल जटिया एंड्रयू यूल और इन्द्रचंद रैली ब्रदर्स की दलाली करने लगे तथा आनन्दीलाल पोदार टोयो मेनका काईशा के बेनियन बने। हरदत्तराय चमड़िया जेम्स टेलर तथा ई.डी. सैसून की दलाली से धन कमाने लगे। सेवाराम खुशालचंद ने जार्डिन हेन्डरसन की बेनियनशिप ली और ताराचंद घनश्यामदास शॉ वालेस का काम देखने लगे। बख्तावर चंद बागड़ी एफ. हैंसलों बौनी एंड कम्पनी के एजेंट हो गए। इस प्रकार मारवाड़ी व्यापारियों ने कई विदेशी कम्पनियों के बेनियन तथा कमीशन एजेंट बनकर धन कमाया।

कई मारवाड़ी व्यापारी तो सट्टे या फाटके के सिवाय कोई अन्य व्यवसाय ही नहीं करते थे। 'टाइम' मैगज़ीन के अनुसार मारवाड़ी, हिन्दुस्तान के सबसे बड़े सट्टेबाज हैं। वे बाजी लगाने के इतने शौकीन होते हैं कि ताश की गड्डी का पत्ता क्या है इस बात पर भी शर्त लगा लेते हैं।[21] सट्टे में माहिर होने के कारण कभी वे मालामाल हो जाते तो कभी कौड़ी–कौड़ी के मोहताज भी। फाटके में पैसा कमाने वाले व्यापारी कहते थे –''कर रे बेटा फाटको, खड्यो पी दूध को बाटको'', जबकि जो व्यापारी सट्टे अपना पैसा गंवा बैठते थे वे कहते –''बेटा ना कर फाटको, घर को रैवेगो ना घाट को।'' यद्यपि फाटके के कारण कई मारवाड़ी फर्में समाप्त हो गई थीं, लेकिन इसके बावजूद सट्टे की तरफ, मारवाड़ी व्यापारियों का रूझान बना रहा। सट्टा बाजार में दो तरह के सटोरिये होते थे। एक आदतन सट्टा करने वाले तथा दूसरे अपने गणित और फलावट को आधार मानकर करने वाले। अठारह सौ साठ से पहले इन व्यापारियों ने दलाली के अलावा अफीम, जूट, कपास और चांदी के सट्टे में भारी कामयाबी हासिल की थी।

कलकत्ता में अफीम और पटसन बाजार प्रारंभ करने का श्रेय, इसी समाज को दिया जाता है, जिसमें इसका एकाधिकार था। फतेहपुर के रामदयाल नेवटिया, पिलानी के बलदेवदास बिड़ला, रामगढ़ के जोखीराम रूईया और नाथूराम पोदार ने सट्टे में बहुत पैसा कमाया। स्वरूपचंद हुक्मचंद, केशोराम पोदार, हरदत्तराय चमड़िया, विश्वेश्वरलाल हलवासिया, गजराज सिंहानिया, निर्मल लोहिया, जुगलकिशोर बिड़ला, स्वरूपचंद पृथ्वीराज रूंगटा, बलदेवदास दूदवेवाला तथा पीरामल, सट्टे के काम में पारंगत थे, जिसमें उन्होंने लाखों के वारे–न्यारे किये। कपास तथा चांदी के सटोरियों के रूप में विख्यात होने वालों में रामरिखदास परसरामपुरिया, गोविन्दराम सेक्सरिया और आनन्दीलाल पोदार प्रमुख थे। बम्बई गजेटियर में लिखा है कि मारवाड़ी अफीम, सूत, चांदी और सोने के सट्टों में प्रमुख हो गए हैं। चांदी के सट्टे में हरदत्तराय चमड़िया ने तथा अफीम के सट्टे में स्वरूपचंद हुक्मचंद ने सबसे ज्यादा पैसा कमाया।

कौड़ी से करोड़

राजपूताना से बिना कौड़ी निकले मारवाड़ि ने मेहनत तथा व्यापार–पटुता के बल पर, अपनी भाग्य रेखाएं बदलते हुए, उद्योग–धंधों में करोड़ों रूपये कमाए। असीम उत्साह तथा व्यावसायिक पहल के कारण वे चारों ओर छा गए। बैंकिंग, सट्टे तथा अन्य कारोबारों में कमाए धन का उन्होंने उद्योग–धंधों में बुद्धिमता–पूर्वक विनियोजन करने का मानस बनाया। केशोराम पोदार ने अठारह सौ उन्नीस में अस्सी लाख रूपये में एक नई मिल खरीदकर इसकी शुरूआत कर दी थी। दुलीचंद कांकरिया ने प्रथम जूट प्रेस की स्थापना की। लेकिन उन्नीस सौ में अस्सी लाख रूपये में एक नई मिल खरीदकर इसकी शुरूआत कर दी थी। दुलीचंद कांकरिया ने प्रथम जूट प्रेस की स्थापना की। लेकिन उन्नीस सौ के बाद तो मारवाड़ी व्यापारी बड़ी संख्या में मिलें खरीदने लगे। बिड़ला परिवार ने उन्नीस सौ उन्नीस में प्रथम जूट मिल और उन्नीस सौ बीस में दिल्ली में तथा उन्नीस सौ इक्कीस में ग्वालियर में कपड़ा मिलें स्थापित की। अब मारवाड़ी, परंपरागत व्यवसाय के बजाय उद्योगपति बनकर मिलों तथा खदानों की ओर तेजी से उन्मुख हुए। उनकी उल्लेखनीय प्रगति पर प्रकाश डालते हुए भारतीय अग्रवल महासभा के सभापति ने कहा था– ''जूट प्रेस के आधे, कॉटन प्रेस के चौथाई और अन्य मिलों के आठवें हिस्से, मारवाड़ियों के पास हैं। तेल और चीनी के कारखानों तथा कोयला और अभ्रक की खानों में भी मारवाड़िययों का प्रमुख हिस्सा है। आयात–निर्यात में भी मारवाड़ी व्यापारियों का अच्छा भाग है। आंतरिक व्यापार में तो मारवाड़ी भारत में प्रमुख हैं ही। इस मामले में कोई जाति मारवाड़ियों की बराबरी नहीं कर सकती।''[22] उनकी इसी व्यापारिक तथा बौद्धिक प्रतिभा को देखकर, अंगरेजों ने इन्हें 'सुपर इन्टेलिजेन्ट' कहा था।

मारवाड़ी व्यापारियों ने ही, कलकत्ता की प्रथम जूट मिल, प्रथम भारतीय बैंक, प्रथम भारतीय बीमा कम्पनी, प्रथम सूत मिल तथा शक्ति से संचालित प्रथम लौह कारखाना स्थापित कर ब्रिटिश व्यापारियों के एकाधिकार को चुनौती दी। उसके बाद कई फर्में मिलों में रूचि लेने लगीं। उन्नीस सौ ग्यारह की जन–गणना के अनुसार, कलकत्ता के चौबीस पटसन कारखानों में से अठारह मारवाड़ियों के थे। इस दौरान उन्होंने कई सूत मिलों की स्थापना की तथा कई जूट और चीनी मिलें उनके नियंत्रण में आ गईं। अहमदाबाद की आधी कपड़ा मिलों के मालिक मारवाड़ी बन चुके थे। इसी तरह मध्य भारत तथा अन्य प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों में भी इनकी स्थापित मिलों का बोलबाला होता जा रहा था। आजादी के पहले मारवाड़ी व्यापारी, निजी मिलों तथा कारखानों की स्थापना के साथ ही यूरोपीय कम्पनियों की खरीद में रूचि लेने लगे थे। सूरजमल नागरममल ने मॅक्लियोड़ और डेवनपोर्ट को खरीदा। बेनेट कौलमैन तथा गौवन ब्रदर्स, डालमिया के नियंत्रण में आ गईं और बांगड़ ने कॅटलेवॅल बुलॅन पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। बद्रीदास गोयनका आक्टेवियस स्टील और डंकन ब्रदर्स के मालिक बन बैठे। रामेश्वरदास बागला ने इंडिया युनाइटेड मिल्स खरीद ली। जयपुरिया ने हॉर्समॅन की स्वदेशी कॉटन मिल को तथा रामकृष्ण डालमिया ने न्यू सैंट्रल जूट मिल को अपने नियंत्रण में ले लिया। पड़रौना के राधाकृष्ण खेतान ने चार करोड़ रूपये देकर ई. डी. सैसून की सभी मिलों को खरीद लिया। इस तरह उन्नीस सौ बावन तक, छियासठ यूरोपीय प्रतिष्ठान, मारवाड़ियों के नियंत्रण में आ गए थे।[23]

आजादी के बाद, मारवाड़ी उद्योगपति उद्योग–धंधों में तेजी से आगे बढ़े। उन्नीस सौ इकतीस में उनके पास कुछ ही कम्पनियाँ थीं, लेकिन उन्नीस सौ बावन तक उन्होंने अन्य भारतीय व्यावसायिक समुदायों की कुल कम्पनियों के छठे भाग पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। कम्पनियों में मारवाड़ी निदेशकों की संख्या, उन्नीस सौ इकतीस में केवल पांच प्रतिशत थी जो उन्नीस सौ इकावन में बढ़कर पचास प्रतिशत हो गई। आजादी के पहले जहां वे, व्यवसाय में सर्वेसर्वा थे आजादी के बाद, उद्योग–धंधों में तेजी से पूंजी–निवेश कर अग्रणी हो गए। इसमें बिड़ला परिवार की प्रगति, विशेष उल्लेखनीय रही, जिन्होंने कॉटन, शुगर तथा जूट मिलें लगाने के बाद तेजी से आधुनिक उद्योगों की स्थापना की ओर ध्यान केन्द्रित किया; जिनमें मोटरकार, पेपर, शिपिंग, बीमा, बैंक, एयरवेज, एल्यूमिनियम, बॉल बेयरिंग, केमिकल्स, सीमेंट, रेयान, रेलवे वैगन, एयर कंडीशनर, पंखे, साइकिल आदि उद्योग प्रमुख थे। इसके बाद, बिड़ला उद्योग समूह ने विदेशी सहयोग और टेक्नोलॉजी के आधार पर परिष्कृत उद्योगों की स्थापना का काम हाथ में लिया। चाय एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त करने वाली कम्पनी मैक्लीन एंड मेगर लि. के माध्यम से, बी.एम. खेतान ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। आज मैक्लीन एंड मेगर लि. विश्व की सबसे बेहतरीन एवं बड़ी चाय उत्पादक कम्पनी है। बी.एम. खेतान द्वारा नियंत्रित लाइट मेटल इंडस्ट्रीज लि. देशभर में एकमात्र ऐसी कम्पनी है जो एल्यूमिनियम शीट का उत्पादन करती है। इसके अतिरिक्त इंडिया फॉयल्स लि. तो देश की सबसे पुरानी और बड़ी फॉयल उत्पादक है जो फार्मास्यूटिकल फॉयल के उत्पादन में विश्व में प्रथम है।

भारत सरकार के एकाधिकार जांच आयोग ने अपनी रिपोर्ट में सैंतीस बड़े उद्योगपतियों की सूची दी थी। इस आयोग का मानना था कि उद्योग के करीब–करीब हर क्षेत्र से मारवाड़ी किसी न किसी रूप में जुड़े हुए हैं। इस आयोग ने भारतीय उद्योगपयिों की विनियोजित सम्पत्ति के संबंध में जो आंकड़े प्रस्तुत किए, उनमें मारवाड़ी सबसे ऊपर थे जिनकी सम्पत्ति, सात अरब पांच करोड़ रूपये के लगभग थी।[24] आयोग